❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पहलगाम हमले का ऐतिहासिक बदला
ऑपरेशन SINDOOR
की सफलता के लिए भारतीय सेना एवं सरकार को
हार्दिक बधाई

वर्ष 48, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 मई, 2025 से रविवार 11 मई, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

दिल्ली का प्रत्येक आर्य सदस्य महा-जनसम्पर्क अभियान के लिए तत्पर

प्रत्येक अधिकारी, कार्यकर्त्ता एंव सदस्य को अधिकाधिक नए लोगों तक पहुंचने का लक्ष्य

वर्तमान में गतिशील कालखंड सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद, ऐतिहासिक और आर्यजनों को गौरवान्वित करने वाला है। आज आर्य समाज एक नए युग की ओर आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष को लेकर चहुं ओर अत्यन्त उत्साह का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत के कोने कोने में और विदेशों में पिछले लम्बे समय से यज्ञ, योग, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण का एक प्रवाह चल रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन और प्रचार-प्रसार तथा विस्तार के विविध कीर्ति स्तंभ स्थापित हो रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुरूप आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यताओं और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के विश्व स्तर पर अभियान चलाए जा रहे हैं।

- शेष पृष्ठ 5 पर

महा जनसम्पर्क अभियान के लिए आर्यसमाज सुदर्शन पार्क की बैठक लेते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं विकासपुरी डी ब्लाक की बैठक लेते महामन्त्री श्री विनय आर्य जी

पहलगांव की घटना को लेकर दिल्ली के प्रशासनिक अधिकारियों को सौंपा ज्ञापन पत्र एवं भेंट की चुनौतियों का चिन्तन

पहलगाव की आतंकी घटना को लेकर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से दिल्ली के विभिन्न एस.डी.एम. महोदयों को ज्ञापन पत्र सौंपा गया। इस अवर पर उन्हें आर्य वीर दल का संक्षिप्त परिचय, आर्य समाज का विवरण तथा चुनौतियों का चिन्तन पुस्तक भेंट की गई।
श्री राजीव सिन्हा (एस.डी.एम, उत्तर), श्री पवन कुमार (एस.डी.एम,दक्षिण), श्री अजय चतुर्वेदी (एस.डी.एम,द.पू.), श्री अरुण गुप्ता (एस.डी.एम, पश्चिम), एवं श्रीमती इति अग्रवाल (एस.डी.एम, राजौरी गार्डन) को ज्ञापन एवं साहित्य देते आर्यवीर दल के अधिकारी

200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल एवं आर्य संस्थाओं के तत्त्वावधान में

राज्यस्तरीय आर्य महासम्मेलन - सोलन

10-11 मई, 2025 (शनिवार-रविवार)

कला एवं संस्कृति केन्द्र कोठों (जटोली) राजगढ़ रोड, सोलन

इस अवसर पर यज्ञ, भजन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, एवं आर्य महासम्मेलन के आयोजन होंगे।

दो दिवसीय महासम्मेलन में आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

सम्मेलन में पधारने वाले आर्यजन आवास व्यवस्था हेतु
श्री सुधीर आर्य जी 8219100344, 9857151334 से सम्पर्क करें।

-: निवेदक :-

प्रबोधचन्द्र सूद — प्रधान
विपन महाजन आर्य — मन्त्री
सुधीर आर्य — कोषाध्यक्ष

पूर्वोत्तर में 200वीं जयन्ती एवं आर्यसमाज के 150वें वर्ष को लेकर

नागालैंड के माननीय राज्यपाल श्री ला. गणेशन से भेंट

पूर्वोत्तर भारत में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ निरन्तर कार्य कर रहा है। इस कड़ी में पूर्वोत्तर राज्य नागालैंड में वैदिक शिक्षा एवं संस्कृति के व्यापक प्रचार-प्रसार, वैदिक आश्रमों के विकास, महिला उत्थान, गोरक्षा, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती एवं आर्य समाज की स्थापना की 150वीं वर्षगांठ मनाने के लिए नागालैंड के राज्यपाल श्री ला गणेशन जी से अ. दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने भेंट की। असम के समन्वयक संतोष शास्त्री एवं बेंजामिन इरियामें शास्त्री जी भी साथ में रहे।

देववाणी-संस्कृत

सर्वद्रष्टा

वेद-स्वाध्याय

य एक इत् ततु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः।।
-ऋ० 6।45।16

ऋषिः-**बार्हस्पत्यः शंयुः** ।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**निचृद्गायत्री**।।

शब्दार्थ- **यः एकः इत्**= जो एक ही है और जो **कृष्टीनाम्**=मनुष्यों का **विचर्षणिः**=सर्वद्रष्टा और **वृषक्रतुः** = सर्वशक्तिमान् **पतिः**=पालक **जज्ञे**=हुआ है **तं उ**=उसकी ही **स्तुहि**=तू स्तुति कर।

विनय- हे मनुष्य! तू किस-किसकी स्तुति करता फिरता है? संसार में तो एक ही स्तुति के योग्य है। संसार में हम मनुष्यों का एक ही पति, पालक और रक्षक है। हे मनुष्य! तू न जाने किस-किसको अपना पालक समझता है और उस-उसकी स्तुति करने लगता है। कहीं तू रुपये-पैसेवाले व्यक्ति को अपना रक्षक समझता है, कहीं तू किसी लब्धप्रतिष्ठ रोबदाबवाले व्यक्ति को अपना स्वामी बनाकर रहता है, कहीं तू किसी दार्शनिक व कवि की प्रज्ञा व प्रतिज्ञा के स्तुति-गीत गाने लगता है, उनके ज्ञान व कवित्व पर तू मोहित रहता है। संसार में ऐसे भी मनुष्य बहुत हैं जो किन्हीं जीवित व जीवरहित आकृतियों के सौन्दर्य को देखकर ही ऐसे मोहित हो जाते हैं कि उनका मन उस सौन्दर्य की प्रशंसा करता नहीं थकता, परन्तु संसार में मनुष्य की स्तुति के पात्र बहुत नहीं हैं। एक ही है, केवल एक ही है और वह इन सब स्तुत्य वस्तुओं का एक स्रोत है। सैकड़ों की स्तुति न कर-इन शाखाओं की स्तुति करने से कल्याण नहीं होता-रक्षा नहीं मिलती। रूप, रस आदि ऐन्द्रियक विषयों की स्तुति तो मनुष्य का विनाश ही करती है, पालन कदापि नहीं। इनकी स्तुति तो अति-अज्ञानी पुरुष ही करते हैं, परन्तु जो संसार में हमारे अन्य रक्षा करने वाले बल, तो अति-अज्ञानी पुरुष ही करते हैं, परन्तु जो संसार में हमारे अन्य रक्षा करनेवाले बल, ज्ञान और आनन्द हैं (बली, ज्ञानी और सुखी लोग हैं) वे भी 'विचर्षणि', 'वृषक्रतु' नहीं हैं, उनमें ज्ञान और बल पर्याप्त नहीं है। संसार के ये सब बल, ज्ञान और आनन्द तो उस एक, सच्चिदानन्द, महासूर्य की क्षुद्र किरणमात्र हैं। इन किरणों की स्तुति करने से अपने को बड़ा धोखा खाना पड़ेगा। हे मनुष्य! ये संसार के क्षुद्र बल और ज्ञान मुनष्य का पालन न कर सकेंगे, ये बीच में ही छोड़ देंगे। इनमें पूरा ज्ञान और बल नहीं है, अतः इनमें आसक्त होकर इनकी स्तुति मत कर। स्तुति उस 'मनुष्यों के एक पति' की कर जो 'विचर्षणि' होता हुआ पालक है और 'वृषक्रतु' होता हुआ पालक है। वह एक-एक मनुष्य को विशेषतया देख रहा है। प्रत्येक मनुष्य को और उसके सब संसार को वह इतनी उत्तमता से देख रहा है कि प्रत्येक मनुष्य यही अनुभव करेगा कि उस मेरे प्रभु को मानों एकमात्र मेरी चिन्ता है और उस पालक पति का एक-एक क्रतु, एक-एक सङ्कल्प, एक-एक कर्म ऐसा 'वृष', अर्थात् बलवान् है कि उसकी सफलता के लिए उसे दुबारा सङ्कल्प व यत्न करने की आवश्कता नहीं होती। हे मूर्ख मनुष्य! अपने उस 'पति' की ही स्तुति कर; उसकी सैकड़ों किरणों की स्तुति छोड़कर उस वास्तविक सूर्य की ही स्तुति कर, उस एक ही स्तुति कर।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भारत सरकार पर जातिगत गणना कराने का दबाव

जातिय जनगणना : जरूरी या मजबूरी

केवल हिन्दुओं की या मुस्लिम सहित अन्य मतावलम्बियों की भी होगी जातिगत गणना?

विपक्ष के बार-बार शोर मचाने के बाद अब केंद्र सरकार ने जातिगत जनगणना करवाने की लंबे समय से चली आ रही मांग को हरी झंडी दिखा दी है। इसे लेकर सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी जीत बता रहे हैं, लेकिन सवाल है कैसी जीत? साथ ही सवाल यह भी है कि क्या जातिगत जनगणना केवल हिन्दुओं की होगी, क्योंकि मुस्लिम समुदाय में भी पसमांदा मुसलमानों में सैंकड़ों जातियां हैं जो ऊँची जाति के मुसलमानों की ठोकर खा रहे हैं। साथ ही सवाल नवबौद्ध और नव ईसाईयों से भी है, जिन्हें यह बताकर हिन्दुओं से अलग किया गया कि वे उन्हें सम्मान देंगे, लेकिन अब उनके लिए आरक्षण मांग रहे हैं।

दरअसल, एक दौर था जब अंग्रेज़ों का भारत गुलाम था। उस दौर में भारत में जातियों के हिसाब से लोगों को गिना जाता था। यानी अंग्रेजों ने जातिवाद को बढ़ाया भी और उसका भरपूर फायदा भी उठाया। इसे ऐसे समझिए कि साल 1853 में आगरा और अवध वाले हिस्से में अंग्रेजों ने पहली जनगणना कराई थी। इसके बाद एक अंग्रेज अफसर थे एच एच रिजले, तो रिजले ने कहा कि हिन्दुओं को जाति में विभाजित करके उन्हें उनकी जातीय पहचान दे दी जाए। उन्होंने वर्ण व्यवस्था और पेशे के आधार पर अलग-अलग जाति समूह बनाए, जिनमें कई नई जातियों को बनाकर इसमें शामिल कर लिया।

इसके बाद 1941 में भी जाति जनगणना हुई, लेकिन आंकड़े पब्लिश नहीं हुए थे। चूँकि दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो चुका था, साल 1951 आते-आते देश आज़ाद हो चुका था। 1951 में सिर्फ अनुसूचित जातियों और जनजातियों को ही गिना गया। यानी अंग्रेजों वाली जनगणना के तरीके में बदलाव कर दिया गया। जनगणना का यही स्वरूप कमोबेश अभी तक चला आ रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो साल 1951 से 2011 तक हर बार की जनगणना में सिर्फ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का डेटा दिया गया, लेकिन दूसरी जातियों का डेटा नहीं दिया गया।

अगर इसमें फिर से आज़ादी के बाद के दौर में जाएं तो संविधान लागू होने के साथ ही एससी-एसटी के लिए आरक्षण शुरू हो गया था। फिर पिछड़े वर्ग की तरफ से आरक्षण की मांग उठने लगी थी। लेकिन सवाल बना कि पिछड़े वर्ग की परिभाषा क्या हो, कैसे इस वर्ग का उत्थान हो, इसके लिए नेहरू सरकार ने 1953 में काका कालेलकर आयोग बनाया था। इस आयोग ने पिछड़े वर्ग का हिसाब लगाया। लेकिन जाति के आंकड़ों का आधार क्या था, कोई नहीं जानता था, तब इन्होंने 1931 की अंग्रेजों वाली जातीय जनगणना वाले कागजों का पुलिंदा उठाया।

किन्तु इसमें भी कालेलकर आयोग के सदस्यों में इस बात पर सहमति नहीं बनी कि पिछड़ेपन का आधार जातिगत होना चाहिए या आर्थिक? कुल मिलाकर ये आयोग इतिहास की एक घटना भर रहा, पिछड़ों को लेकर कोई नीतिगत बदलाव इस आयोग के बाद नहीं हुआ।

ऐसा चलते-चलते साल आ गया 1978, इमरजेंसी के बाद सत्ता में जनता पार्टी की सरकार थी। और प्रधानमंत्री थे मोरारजी देसाई। तब जनता पार्टी सरकार ने बीपी मंडल की अध्यक्षता में एक पिछड़ा वर्ग आयोग बनाया। दिसंबर 1980 में मंडल आयोग ने अपनी रिपोर्ट दी। तब तक जनता पार्टी की सरकार जा चुकी थी। मंडल आयोग ने 1931 की जनगणना के आधार पर ही ज्यादा पिछड़ी जातियों की पहचान की। कुल आबादी में 52 फीसदी हिस्सेदारी पिछड़े वर्ग की मानी गई।

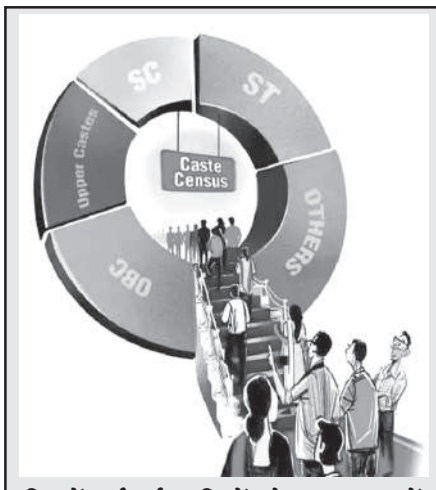

एक दौर था जब अंग्रेज़ों का भारत गुलाम था। उस दौर में भारत में जातियों के हिसाब से लोगों को गिना जाता था। यानी अंग्रेजों ने जातिवाद को बढ़ाया भी और उसका भरपूर फायदा भी उठाया। इसे ऐसे समझिए कि साल 1853 में आगरा और अवध वाले हिस्से में अंग्रेजों ने पहली जनगणना कराई थी। इसके बाद एक अंग्रेज अफसर थे एच एच रिजले, तो रिजले ने कहा कि हिन्दुओं को जाति में विभाजित करके उन्हें उनकी जातीय पहचान दे दी जाए। उन्होंने वर्ण व्यवस्था और पेशे के आधार पर अलग-अलग जाति समूह बनाए, जिनमें कई नई जातियों को बनाकर इसमें शामिल कर लिया ..... इसके बाद1941 में भी जाति जनगणना हुई, लेकिन आंकड़े पब्लिश नहीं हुए थे। चूँकि दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो चुका था, साल 1951 आते-आते देश आज़ाद हो चुका था। 1951 में सिर्फ अनुसूचित जातियों और जनजातियों को ही गिना गया। यानी अंग्रेजों वाली जनगणना के तरीके में बदलाव कर दिया गया। जनगणना का यही स्वरूप कमोबेश अभी तक चला आ रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो साल 1951 से 2011 तक हर बार की जनगणना में सिर्फ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का डेटा दिया गया, लेकिन दूसरी जातियों का डेटा नहीं दिया गया।

आयोग ने पिछड़े वर्ग को सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में 27 प्रतिशत आरक्षण देने की सिफारिश की। मंडल आयोग की रिपोर्ट पर 9 साल तक कुछ नहीं हुआ। अचानक देश में बोफोर्स का मुद्दा उछला, राजीव गांधी की सरकार चली गई और केंद्र में सरकार आई वी पी सिंह की, जिसे भाजपा और वामपंथी दलों का बाहरी समर्थन मिला था। 1990 में वी पी सिंह की सरकार ने मंडल आयोग की एक सिफारिश को लागू कर दिया। ये सिफारिश अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों को सरकारी नौकरियों में सभी स्तर पर 27 फीसदी आरक्षण देने की थी। तब आरक्षण के खिलाफ खूब बवाल हुआ था। देशभर में प्रदर्शन हुए थे। मामला कोर्ट में भी गया था। सुप्रीम कोर्ट ने भी आरक्षण को सही माना लेकिन अधिकतम लिमिट 50 फीसदी तय कर दी।

इसके बाद 2006 में कांग्रेस की सरकार थी, प्रधानमंत्री थे मनमोहन सिंह और केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने मंडल पार्ट-2 शुरू कर दिया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तनाव मुक्ति

गतांक (24 से 31 मार्च) के आर्यसन्देश से आगे -

जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होता या हम उन परिस्थितियों को बदलने में असमर्थ होते हैं, तो प्राय: भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है। फिर कुछ लोग भाग-दौड़, तनावग्रस्त जीवन पद्धति के आदि हो जाते हैं, जो दबाव में जीने की वजह से पैदा होता है। लेकिन तनाव में जीने की जिन्हें एक बार आदत पड़ जाती है फिर अगर उनके जीवन में तनाव नहीं भी होता तो वे लोग स्वयं तनाव पैदा कर लेते हैं। उन्हें फिर तनाव मुक्त जीवन अच्छा नहीं लगता। ऐसे लोगों को हंसते, खेलते हुए बच्चे भी बुरे लगने लगते हैं। अगर कोई हंसने-हंसाने की बात भी उनके सामने की जाए तो भी उन्हें हंसी नहीं आती। लेकिन कभी अधिक प्रयास करने से तनाव में जीने वाला व्यक्ति अगर हंस भी दे तो फिर उसके मुंह को खुला हुआ देखकर बच्चे डर जाते हैं। क्योंकि जो आदमी आठ-दस महीनों के बाद हंसेगा तो उसके चेहरे का आकार डरावना हो ही जाएगा।

तनाव के बुरे प्रभाव से बचने के लिए-

1) आप स्वयं अपना निरीक्षण करें, आपके सोचने-विचारने का ढ़ंग कैसा है? इस पर गहराई से सोचें।

2) दूसरों की उन्नति-प्रगति और सफलता को देखकर आपको जलन तो नहीं होती? अगर होती है तो इस दुर्गुण को दूर करें।

3) किसी की सफलता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव न उभरने दें बल्कि उसकी प्रशंसा करें, उसको साबाशी देकर देखें आपके भीतर एक नया बदलाव आप महसूस करेंगे, आपके मन को मजबूती मिलेगी।

4) दूसरों में कमियां खोंजना बंद करें, आपके अंदर अच्छाइयां आना शुरू हो जाएंगी, दुनिया में महत्वपूर्ण होना अच्छी बात है लेकिन अच्छा होना उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।

5) छोटी-छोटी बातों को दिल से लगाना बंद करें आपके अंदर बड़ी-बड़ी समस्याओं से लड़ने की ताकत आ जाएगी, फिर आपकी समस्याएं छोटी हो जाएंगी और आप स्वयं बड़े हो जाएंगे।

6) इसलिए कहा भी जाता है कि मन के हारे हार है और मन के जीते जीत, जीत, मन चंगा तो कठौती में गंगा, इस लिए हर स्थिति और परिस्थिति में अपने मन को मजबूत बनाएं। तनाव से बचने के लिए मनोबल को ऊंचा रखें।

''तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।''

सांसारिक उठापटक के कारण, संसार के द्वन्द्वों के कारण, प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समय-समय पर ऐसे दबाव और प्रभाव बनते हैं, जिनके कारण उसका मनोबल प्रभावित होता है और धीरे-धीरे अंदर से इंसान कमजोर होने लगता है। बाहर की स्थितियां-परिस्थितियां मनुष्य को आंतरिक रूप से प्रभावित करती हैं और आंतरिक वातावरण तथा स्थितियां मनुष्य के आचरण को और व्यवहार को प्रभावित करती हैं। मनुष्य जहां-जहां से बन्धन होता है, वहीं-वहीं से कमजोर पड़ता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष से प्रभावित होकर किए गए अशुभ कर्मों के फल मनुष्य के सामने आते ही हैं। कर्म शुभ होगा, तो फल सुखकारी होगा, अगर कर्म अशुभ है, तो फल दु:ख देने वाला होगा। इसलिए मनुष्य के जीवन में कभी सुख, कभी दु:ख, कभी हर्ष, कभी उदासी, कभी हंसी, कभी रोने जैसी स्थितियां आती-जाती रहती हैं।

लेकिन एक जैसी स्थितियां हमेशा कभी किसी की नहीं रहती, अपने मन में उम्मीद की आशा-उत्साह का रोज नया दीपक जलाकर रखिए, शुभ सोचिए, सकारात्मक चिंतन कीजिए, निष्काम भाव से कर्त्तव्य कीजिए, समय बदलेगा, अच्छा होना शुरू हो जाएगा।

आर्य संदेश में प्रकाशित स्वास्थ्य संदेश के कॉलम में जो स्वास्थ्य संबंधी लेख, मौसम परिवर्तन में सावधानी बरतने, आसन, प्रणायाम, आहार, उचित जीवन शैली अथवा औषधियों से होने वाले लाभ चिकित्सा पद्धति आदि की जानकारी दी जाती है, तो वह केवल ''सर्वे सन्तु निरामया'' की परोपकारी भावना तक ही सीमित है। अतः आर्य संदेश में प्रकाशित व स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी का लाभ तो लें किंतु अगर कोई अस्वस्थ्य है तो अपने चिकित्सक से ही उपचार कराए। -संपादक

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

वर्ण व्यवस्था-ज्ञान की अवनति के परिणाम

गतांक से आगे -

समाज में पनपी इन तीनों ही प्रवृत्तियों ने राज्य और समाज के मजबूत ताने-बाने को कमजोर करके तहस-नहस कर दिया ओर अयोग्यों को योग्यों का स्थान लेने का मार्ग खुल गया।

यह तो था व्यवस्था की अवनति का एक छोटा-सा उदाहरण। अब ज्ञान की अवनति को समझने के लिए ये दूसरा उदाहरण देखिये—

राजा 'वेद' के आधार पर शासन करता था। राजा कोई भी निर्णय लेने से पूर्व राजगुरु से मन्त्रणा अवश्य ही करते थे और राजा का निर्णय वेदानुकूल है या नहीं, यह व्यवस्था पाते थे। राजा स्वयं भी वेद का ज्ञान रखते थे पर निष्णात राजगुरु से ही व्यवस्था लेने का नियम और परम्परा थी और इसी परम्परा के कारण राज्य को धर्म का शासन कहा जाता था।

एक राजा की एक बार 'सुरापान' करने की इच्छा पैदा हुई। राजगुरु से व्यवस्था ली गई। राजगुरु ने इसको वेद की आज्ञा से प्रतिकूल बताया। राजा ने राजगुरु को ऐसी व्यवस्था को सिद्ध करने हेतु सोने की मोहरें और भूमि दान का लोभ दिया। दुर्भाग्य... राजगुरु लोभ में आ गए और वेद के अर्थों को बदलकर 'सोमपान' को ही 'सुरापान' की व्यवस्था बता दिया। इससे पुन: तीन बड़ी हानियां हुईं—

पहला—वेद के गलत अर्थ प्रचलित होने का मार्ग खुल गया, जिन्होंने वेद ज्ञान को सुरक्षित रखना था, इन्हीं ने ही लोभ में आकर इसके गलत अर्थ करने आरम्भ किए।

दूसरा—राजा के वेद विरुद्ध आचरण का मार्ग प्रशस्त हो गया।

तीसरा— राजगुरु का दर्जा ''लालच और लोभवश'' लगातार नीचे आता चला गया। राजा को ये पता चल गया कि पैसे देकर अपनी इच्छानुसार व्यवस्था को वेद के अनुसार दर्शाया जा सकता है।

कालान्तर में इसी हानि के कारण राजा-राजगुरु, व्यापारी और अन्य वर्गों में वेद विरुद्ध आचरण ने जन्म ले लिया और ये ही थी हमारे अक्षुण्ण वैभवकाल के पतन की शुरुआत अर्थात् इन्हीं कारणों से ही हमारे अक्षुण्ण वैभव का पतनकाल प्रारम्भ हुआ।

कुछ वेद विरुद्ध परम्पराएं तो रामायण काल में आरम्भ हो गई थीं, जो महाभारत काल आते-आते बहुत बढ़ गई। रामायण काल की बहुपत्नी प्रथा, महाभारत काल की जुआ प्रथा, मदिरापान, नृत्य आदि जो राजनैतिक जगत् में पूरी तरह निषिद्ध थे, राजाओं के आचरण में होने के कारण वे धीरे-धीरे सामान्य जनता में भी प्रचलित होने लगे और उच्च वर्ग के जीवन का भाग भी बन गया। राज्य सेवा की वस्तु न होकर शासन का केन्द्र बन गया। शासन को बढ़ाने और बनाए रखने के लिए विपरीत आचरण शुरु हुए। परिणामस्वरूप महाभारत के युद्ध के हालात बनें। विनाशकारी युद्ध हुआ, समस्त विश्व के राजे-महाराजे किसी एक शक्ति का साथ दे रहे थे—कुछ कौरवों का, कुछ पाण्डवों का। इस युद्ध का अन्त अत्यधिक विनाशकारी था। बड़े-बड़े योद्धा समाप्त हो गए, बड़े-बड़े राजा, बड़े-बड़े गुरुकुलों के आचार्य समाप्त हो गए, लाखों नारियां विधवा हो गई, वंश के वंश समाप्त हो गए। ज्ञान-विज्ञान के अद्भुत ज्ञाता, योग्य गुरु के साथ ज्ञान-विज्ञान भी समाप्त हो गया। इस विनाश को देखकर शस्त्र निर्माण पर रोक लग गई। लोग मानव संहारक शस्त्रों से इतने विमुख हो गए कि इनसे सम्बन्धित समस्त विज्ञानशालाओं और ग्रन्थों को नष्ट कर दिया गया।

महाभारत युद्ध के उपरान्त कुछ समय युधिष्ठिर का राज्य रहा। पाण्डव जीतकर भी लम्बे समय तक राज करने इच्छा न रख सके और परिवार के विनाश से दु:खी होकर वन गमन कर गए। इस सबसे आने वाले समय पर पड़ने वाले प्रभाव और अधिक घातक थे। भारत के प्राचीनतम शिक्षा केन्द्र समाप्त प्राय: हो गए। जहां विश्व भर से लोग ज्ञान-विज्ञान सीखने आते थे, वह राष्ट्र आज स्वयं ज्ञान विहीन-सा हो गया था।

- क्रमश:

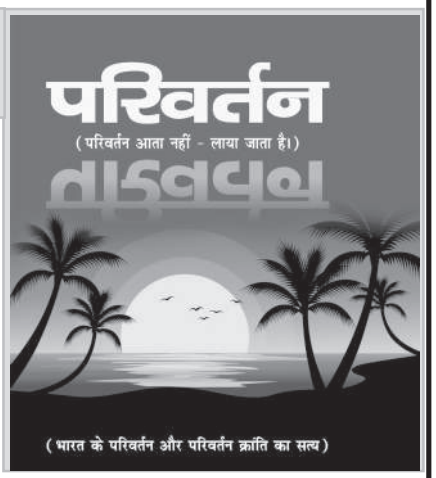

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती एवं 150वें स्थापना वर्ष पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा संचालित आर्य विद्यालयों की नाटक प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्यसमाज की सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित प्रेरक नाटिकाओं का हुआ मंचन

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वीं जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज के महापुरुषों के जीवन तथा उनके साथ घटित प्रेरक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित विशेष नाटिका प्रतियोगिता का आयोजन 2 मई 2025 को रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल राजा बाजार में अत्यंत उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने नाटिकाओं का मंचन किया जो अपने आपमें अत्यंत सारगर्भित तथा प्रेरक सिद्ध हुआ। आर्य समाज का इतिहास हमेशा से मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित रहा है, आर्य समाज के महापुरुष और आर्यवीर बलिदानियों ने एक से बढ़कर एक कीर्तिमान स्थापित किए हैं जो संपूर्ण मानव मात्र के लिए आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि उस समय में थे।

प्रस्तुत नाटिकाओं में प्रतियोगी छात्र-छात्राओं ने पंडित लोकनाथ तर्क वाचस्पति, पं. चमूपति, चौधरी मातूराम, प्रोफेसर शेर सिंह, फूलचंद शर्मा निडर, विशुद्धा, रामचंद्र देहलवी, जस्टिस मेहर चंद महाजन, पं. रुलिया राम, सत्यानंद स्टोक्स आदि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए दर्शाया कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी के शिष्य किसी भी विपरीत परिस्थिति में महर्षि की प्रेरणा और आर्य समाज के सिद्धांतों से समझौता नहीं करते थे, उन्होंने आर्य समाज की मान्यताओं के प्रचार-प्रसार और विस्तार में समर्पित होकर देश और दुनिया को मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के पथ का राही बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, ढोंग और पाखंडों से समाज को बचाने के लिए, वेद के मार्ग पर चलने की शिक्षा प्रदान की, वे महापुरुष प्रवाह के विपरीत चले, उन्होंने अनेक कष्ट और तिरस्कार सहा, अपनी और परिवार की भी परवाह नहीं की, बस आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाते रहे। इन नाटिकाओं को देखकर उपस्थित जन समूह भावविभोर हो गया।

इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता सुरेन्द्र कुमार रैली, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, उपप्रधान अरुण प्रकाश वर्मा जी, विद्यालय के चेयरमैन संजय कुमार जी, प्रबन्धक, श्रीमती रश्मि वर्मा जी, श्रीमती वीना आर्या जी , श्रीमती अनु वासुदेव जी, एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहे और सभी ने प्रतियोगी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया।

निर्णायक मंडल में डॉ. उमा शशि दुर्गा, श्रीमती उषा रिहानी जी एवं श्रीमती माया तिवारी जी ने निष्पक्ष निर्णय दिया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले प्रतिभागियों सहित सभी प्रतियोगियों सांत्वना पुरस्कार दिए गये। - ***संयोजिका***

आर्य समाज रांची झारखंड द्वारा तीन दिवसीय चरित्र निर्माण शिवर संपन्न

माननीय राज्यपाल जी से भेंट एवं बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारागार रांची में प्रवचन रहा विशेष आकर्षण

आर्य समाज रांची, झारखंड द्वारा डी.ए.वी नंदराज पब्लिक स्कूल लालपुर रांची में छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु त्रि दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर में 17 से 19 अप्रैल तक आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने छात्रों को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सूत्र प्रदान किए। भजनोपदेशक श्री नेत्रपाल जी ने मधुर भजनों से महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के सिद्धांत और मंतव्यों की प्रेरणा दी। बच्चों को उत्तम लक्ष्य प्राप्ति के साधन बताते हुए आचार्य जी ने उनके प्रश्नों के समाधान भी अपनी सरल, सहज भाषा में प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने झारखंड के माननीय राज्यपाल श्री संतोष गंगवार जी से राजभवन जाकर लगभग 20 मिनट तक मुलाकात की, उनको महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रंथ भेंट किए।

आपने हिन्दू जाति के धर्मांतरण व गंभीर चुनौतियों पर चर्चा की। आचार्य जी के साथ आर्य समाज रांची के मंत्री श्री अजय आर्य जी तथा भजनोपदेशक श्री नेत्रपाल आर्य व शिष्टमंडल था।

पुरुषार्थी जी ने बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारागार रांची के कैदी भाइयों को उपदेश दिया। उन्हें ईश्वर की न्याय व्यवस्था के बारे में विस्तार से बताया। ईश्वर किसी भी परिस्थिति में हमारे पापों को क्षमा नहीं करता है। मन वाणी और शरीर से हम जो भी अच्छा बुरा कार्य करते हैं लगभग उसी साधन के मुख्य रूप से उत्कर्ष व अपकर्ष से आत्मा को इस जन्म में या अगले जन्मों में इसका फल भोगना होता है। भजनोपदेशक श्री नेत्रपाल जी ने भी ईश्वर भक्ति के भजनों से कैदी भाइयों को मार्गदर्शन दिया। ध्यातव्य है इस जेल में 4000 कैदी हैं प्रतिदिन सैकड़ों कैदियों को वीडियो कॉन्फ्रेंस से न्यायालय के समक्ष पेश किया जाता है।- ***अजय आर्य, मंत्री***

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना नर्व पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के अन्तर्गत

आर्य समाज हल्द्वानी 134वाँ वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती सभागार का लोकार्पण

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के अन्तर्गत आर्य समाज हल्द्वानी का 134वाँ वार्षिकोत्सव समारोह 11 से 13 अप्रैल, 2025 तक हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्वामी मुक्तानन्द जी के प्रवचन एवं पंडित कुलदीप आर्य जी के भजनोपदेश हुए। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य जी ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीना आर्या जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री डी.पी. यादव, आर्य समाज हल्द्वानी के प्रधान डॉ विनय विद्यालंकार जी, महामंत्री हरीश चन्द्र जी पंथ एवं आर्य समाज हल्द्वानी के अधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित हुए। समापन समारोह के अवसर पर 13 अप्रैल, 2025 को महर्षि दयानन्द सरस्वती सभागार, संस्कार प्रशिक्षण केन्द्र, बहुद्देशीय कक्ष एवं स्व. श्री हजारीलाल अग्रवाल स्मृति द्वार का लोकार्पण भी किया गया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य जी को स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत भी किया गया। – *मन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली का प्रत्येक आर्य सदस्य .....

इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जनसंपर्क अभियान को लेकर विभिन्न स्थानों पर चिंतन, मनन और संगोष्ठियों के आयोजन संपन्न हो रहे हैं। सभा अधिकारी, क्षेत्रीय समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उत्साह पूर्वक सहभागी बन रहे हैं, आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्पित आर्यजन स्वयं आगे आ रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की मशाल से जगत को आलोकित कर रहे हैं। इस क्रम में आर्यसमाज डी ब्लाक विकास पुरी, आर्यसमाज जोर बाग लोधी रोड, विवेक विहार, सूरजमल विहार, रमेश नगर सागरपुर, न्यू मोती नगर, नांगल राया एवंआर्यसमाज एल ब्लाक हरिनगर में जनसम्पर्क अभियान के लिए बैठकें सम्पन्न हो चुकी हैं तथा निरन्तर पूरी दिल्ली में बैठकों का दौर जारी है।

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

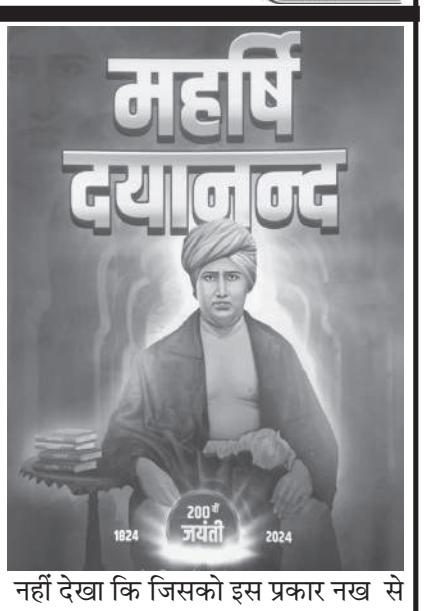

गतांक से आगे-

इतने कष्ट में भी महर्षि का धैर्य आश्चर्यजनक था। उसे देखकर मित्र और शत्रु दांतों तले उंगली दबाते थे। इतना कष्ट और 'आह' तक नहीं! धैर्य से रोग को सह रहे थे और पूछने पर केवल यथार्थ दशा बतला देते थे। शरीर छालों से भरा हुआ था, बोलने में असह्य कष्ट होता था, हिलना-डुलना भी कठिन हो रहा था। ऐसी दशा में भी महर्षि के मुंह पर न घबराहट थी और न खिजलाहट। वही गम्भीर चेहरा था और वही शान्त मुद्रा थी। जिन लोगों ने उस दशा में महर्षि दयानन्द को देख, उन्होंने अनुभव किया कि इस मनुष्य में अवश्य ही कोई दिव्य शक्ति काम कर रही है। उनके हृदयों में यह बात अंकित हो गई कि इस महापुरुष के हृदय में निश्चय से परमात्मा की शक्ति काम कर रही है।

महर्षि जी की बीमारी का वृत्तान्त बहुत दिनों तक छिपा न रहा। अजमेर में समाचार पहुंचते ही आर्य-पुरुष जोधपुर के लिए रवाना हुए और महर्षि जी की दशा देखकर आश्चर्यित हो गए। रोग की दशा, इलाज की शिथिलता और सेवा की असुविधा देखकर आर्य पुरुषों ने महर्षि से आग्रह किया कि आप आबू पहाड़ पर चलें। महर्षि ने स्वीकार कर लिया।

महाराजा को सूचना मिलने पर पहले तो दु:खित हुए, परन्तु फिर महर्षि जी का आग्रह देखकर खिन्न मन से आदरपूर्वक विदाई का प्रबन्ध कर दिया। विदाई के समय स्वयं उपस्थित होकर रास्ते के आराम की भली प्रकार व्यवस्था कर दी। जोधपुर से डोली में महर्षि जी आबू पर्वत पर गए, परन्तु वहां भी कोई विशेष आराम दिखाई न दिया। तब महर्षि जी के शिष्य उन्हें अजमेर वापस ले गए। इस यात्रा में उन्हें बहुत शारीरिक कष्ट हुआ, परन्तु अच्छा इलाज करने और स्वयं सेवा करने की शिष्यों की प्रबल इच्छा में बाध डालना उन्होंने उचित न समझा। अजमेर में महर्षि जी को एक कोठी में ठहराया गया, और डॉ लक्ष्मणदास जी का इलाज प्रारम्भ हुआ।

महर्षि का मृत्यु-समय निकट आ रहा था। इलाज और सेवा कुछ परिवर्तन पैदा न कर सके। अन्तिम समय का दृश्य एक दर्शक की लेखनी द्वारा जिन सरल शब्दों में चित्रित किया गया है, हम उससे उत्तम वर्णन नहीं कर सकते, इस कारण उसी को उद्धृत करते हैं-

रेल से उतारकर महर्षि जी को पालकी में लिटा लिया गया और सावधनी से उन्हें एक कोठी में ले आए, जो पहले से इस काम के लिए नियत कर रखी थी। उस सयम रात के तीन बजे थे। अक्टूबर का अन्त था। लोगों को सर्दी मालूम देती थी, परन्तु महर्षि जी के मुंह से केवल 'गर्मी-गर्मी' का शब्द निकलता था। कोठी के सब दरवाजे खुलवा दिये गए, तब भी महर्षि जी को शान्ति न हुई। दूसरे दिन डॉ लक्ष्मणदास जी का इलाज शुरू हुआ, पर रोगी की दशा में कुछ अन्तर न हुआ। एक बार महर्षि जी ने अपने प्रेमीजनों से कहा, 'हमको मसूदा ले चलो!' इस पर सबने कहा कि आराम होने पर हम आपको वहां पहुंचा देंगे, इस दशा में बार-बार यात्रा करना ठीक नहीं है। इस पर महर्षि जी ने कहा कि 'दो दिन में हमको पूरा आराम पड़ जायगा।' यह उत्तर स्मरण रखने योग्य है। अब महर्षि जी के सारे शरीर में छाले ही छाले दिखने लगे। 29 अक्टूबर को महर्षि जी का शरीर अत्यन्त ही निर्बल हो गया। आपने सेवकों से कहा कि हमें बिठा दो। जब उन्हें बिठाया गया तो कहा कि 'छोड़ दो, हमें सहारे की आवश्यकता नहीं है।' तब वह कितनी देर तक बिना सहारे बैठे रहे। उस समय सांस जल्दी-जल्दी चल रही थी, पर महर्षि जी उसे रोककर बल से फेंक देते थे, और ईश्वर के ध्यान में मग्न हो रहे थे। रात कष्ट अधिक रहा। दूसरे दिन 30 अक्टूबर को डॉक्टर न्यूमन साहब बुलाए गए। जिस समय उक्त डॉक्टर साहब ने महर्षि जी को देखा तो बड़े आश्चर्य से कहने लगे कि 'धन्य है इस सत्पुरुष को हमने आज तक ऐसा दिल का मजबूत कोई दूसरा मनुष्य नहीं देखा कि जिसको इस प्रकार नख से शिख तक अपार पीड़ा हो और वह तनिक भी आह या ऊह न करे।' उस समय महर्षि जी के कण्ठ में कफ की बड़ी प्रबलता थी, जिसकी निवृत्ति के लिए डॉक्टर न्यूमन ने कई उपाय किये, परन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। 11 बजे दिन के महर्षि जी का श्वास विशेष बढ़ने लगा। उन्होंने कहा कि हम शौच जाएंगे। उस समय महर्षि जी को चार आदमियों ने उठाया, और शौच करने की चौकी पर बिठा दिया।

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

The number of squads started increasing everyday. Mouth, head and forehead were filled with ulcers, hiccups were tied and the body became very emaciated. Dr. Alimardan's treatment was backfiring. The historian has no right to say with certainty whether the idol of the doctor or some other deeper emotion was at the bottom of this fatal change, unless a convincing argument can be given in support of either hypothesis. Yes, it is certainly suspicious that the condition was deteriorating and the doctor used to say that the condition was getting better. Poison had entered the sage's body. The doctors had given the same opinion that the patient had been poisoned. It seems that due to the inspiration of hypocrites, Jagannath Brahmin gave milk mixed with poison while sleeping at night. It is said that he might not be punished for poisones by them, Dayalu Rishi paid the rent and asked him to flee to Nepal.

The patience of the sage even in such distress was astonishing. Seeing him, friends and enemies used to be astonished. So much trouble and not even a Sigh! He was patiently tolerating the disease and used to tell only the exact condition when asked. The body was full of ulcers, there was unbearable pain in speaking, it was becoming difficult to move. Even in such a condition, there was neither panic nor irritation on the face of the sage. He had the same serious face and the same calm posture. The people who saw Swami Dayanand in that condition, they felt that some divine power is definitely working in this man. It was imprinted in their hearts that the power of God was working with determination in the heart of this great man.The story of Swamiji's illness did not remain hidden for a long time. As soon as the news reached Ajmer, Arya men left for Jodhpur and were surprised to see Swamiji's condition. Due to the condition of disease, laxity of treatment and inconvenience of service, Aryan men urged the sage to go to Mount Abu. The sage accepted. On getting the information, the Maharaja was upset at first, but then on the insistence of Swami ji, with a detached heart, made arrangements to bid farewell respectfully.

d and forehead were filled with ulcers, hiccups were tied and the body became very emaciated. Dr. Alimardan's treatment was backfiring. The historian has no right to say with certainty whether the idol of the doctor or some other deeper emotion was at the bottom of this fatal change, unless a convincing argument can be given in support of either hypothesis. Yes, it is certainly suspicious that the condition was deteriorating and the doctor used to say that the condition was getting better. Poison had entered the sage's body. The doctors had given the same opinion that the patient had been poisoned. It seems that due to the inspiration of hypocrites, Jagannath Brahmin gave milk mixed with poison while sleeping at night. It is said that he might not be punished for poisones by them, Dayalu Rishi paid the rent and asked him to flee to Nepal.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

केवल हिन्दुओं की या मुस्लिम सहित अन्य मतावलम्बियों की भी होगी जातिगत गणना?

इस बार मंडल आयोग की एक दूसरी सिफारिश को लागू किया गया। सिफारिश ये थी कि सरकारी नौकरियों की तरह सरकारी शिक्षण संस्थानों, मसलन यूनिवर्सिटी, आईआईटी, आईआईएम, मेडिकल कॉलेज में भी पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिया जाए। इस बार भी बवाल हुआ लेकिन सरकार अड़ी रही और ये लागू भी हुआ। 2010 में आकर फिर जाति आधारित जनगणना की मांग उठी। लालू यादव, शरद यादव, मुलायम सिंह यादव और गोपीनाथ मुंडे जैसे नेताओं ने जोर-शोर से ये मांग उठाई। लेकिन तब कांग्रेस ने इसे लेकर उत्साह नहीं दिखाया।

किन्तु बाद में सरकार के सहयोगियों के दबाव के बाद मनमोहन सरकार को जाति जनगणना पर विचार करना पड़ा। साल 2011 में प्रणब मुखर्जी की अगुवाई में एक कमेटी बनाई गई। इसने जाति जनगणना के पक्ष में सुझाव दिया। इस जनगणना को नाम दिया गया- 'सोशियो-इकनॉमिक एंड कास्ट सेन्सस'। 4 हजार 893 करोड़ रुपये खर्च कर सरकार ने जनगणना कराई। ज़िले के हिसाब से पिछड़ी जातियों को गिना गया। जातीय जनगणना का डेटा सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय को दिया गया। डेटा के वर्गीकरण के लिए नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष अरविंद पंगारिया के तहत एक विशेषज्ञ समूह बनाया गया। लेकिन ये साफ नहीं है कि इसने अपनी रिपोर्ट दी या नहीं। क्योंकि ऐसी को रिपोर्ट अब तक सार्वजनिक नहीं की गई है। कुल-मिलाकर करोड़ों रुपये खर्च करने के बाद भी केंद्र सरकार आज तक ये आंकड़ा जारी नहीं कर पाई है।

जुलाई 2021 में संसद के भीतर मौजूदा सरकार से जातीय जनगणना पर सवाल पूछा गया था। सवाल था कि 2021 की जनगणना जातियों के हिसाब से होगी या नहीं? नहीं होगी तो क्यों नहीं होगी? सरकार का लिखित जवाब आया कि सिर्फ एस.सी.एस. टी. को ही गिना जाएगा।

साल 2024 के लोकसभा चुनाव में विपक्ष द्वारा जातीय जनगणना की बात होती रही, संसद में भी इसे लेकर बवाल होता रहा। अब जाकर केंद्र की सरकार ने इसे हरी झंडी दिखाई ऐसा होने पर किस जाति के कितने लोग देश में हैं, यह जानकारी आज़ाद भारत में पहली बार सामने आएगी। लेकिन इसमें एक सवाल है और वो है कि क्या केवल हिन्दुओं की ही जाति जनगणना होगी या अन्य मतों के लोगों की भी? क्योंकि अब्दुल बिस्मिल्लाह का लिखा कुठांव उपन्यास भारतीय मुस्लिम समाज के एक दिखने वाले ढांचे पर भयंकर प्रहार करता है। 90 के दशक में बिहार से डॉ. एज़ाज़ अली के आल इंडिया बैकवर्ड मुस्लिम मोर्चा बनाया था। इसके बाद अली अनवर के ऑल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महाज़ और महाराष्ट्र से शब्बीर अंसारी के ऑल इंडिया मुस्लिम ओबीसी ऑर्गेनाइजेशन जैसे संगठनों ने मुसलमानों के भीतर जाति भेदभाव को लेकर आंदोलनों को गति दी। लेकिन असल सच तब सामने निकलकर आया जब चार शोधकर्ताओं जिनमें प्रशांत के त्रिवेदी, श्रीनिवास गोली, फ़ाहिमुद्दीन और सुरेंद्र कुमार ने अक्टूबर 2014 से अप्रैल 2015 के बीच उत्तर प्रदेश के 14 ज़िलों के 7,000 से ज़्यादा मुस्लिम घरों का सर्वेक्षण किया था। इस सर्वेक्षण में दलित मुसलमानों के एक बड़े हिस्से का कहना है कि उन्हें गैर-दलितों की ओर से शादियों की दावत में निमंत्रण नहीं मिलता। उन्हें बड़ी जाति के मुसलमानों से जाति सूचक शब्द सुनने को मिलते हैं और उनका अपमान किया जाता है। दूसरा इस सर्वेक्षण में दलित मुसलमानों के एक समूह ने कहा था कि उन्हें गैर-दलितों की दावतों में अलग बैठाया जाता है। उच्च-जाति के लोगों के खा लेने के बाद ही उन्हें खाना दिया जाता है। बहुत से लोगों ने यह भी कहा था कि उन्हें अलग थाली में खाना दिया जाता है। जातिवाद का यह नंगा नाच भेदभाव सिर्फ शादी तक सीमित नही है, बल्कि दलित मुसलमानों ने कहा कि मदरसों में उनके बच्चों को कक्षा में और खाने के दौरान अलग-अलग पंक्तियों में बैठाया जाता है। ऐसे ही सा समाज में हाल जो धर्मांतरण तो करते हैं ये बोलकर कि उनके यहाँ जातिवाद नहीं है, किंतु बाद में अब वो भी उनके लिए आरक्षण मांग रहे हैं अगर अब सरकार जातीय जनगणना करा ही रही है तो खुलकर सबका सच सामने आना चाहिए ताकि सच का पता चल सके।

-संपादक

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

आर्यसमाज द्वारा संचालित
सुशीलराज आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के अन्तर्गत
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
रजिस्ट्रेशन शुल्क 100 रुपए मात्र/-

प्रमुख सुविधाएं
मार्गदर्शन
रहना
शिक्षण
खाना
इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org
आवेदन की अंतिम तिथि - 30 जून 2025
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

ओ३म्
आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश
(आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश की महिला प्रांतीय इकाई)
के तत्वावधान में
विशाल चरित्र निर्माण
एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर
दिनांक: रविवार 18 मई से रविवार 25 मई 2025 तक
स्थान: रघुमल आर्य कन्या विद्यालय, राजा बाजार कनॉट प्लेस, दिल्ली

माननीय महोदय,
क्या आप चाहते हैं कि आपके परिवार की बेटियां निर्भीक-निडर होकर इस समाज में रहें। क्या आपकी बेटी समाज व राष्ट्र के प्रति जागरूक हों, और वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत हों, यदि हाँ?......तो इनको आर्य वीरांगना दल, दिल्ली प्रदेश के शिविर में अवश्य भेजें। इस शिविर में इनको आत्मरक्षा गुणों के साथ व्यक्तित्व विकास, योग्य शिक्षिकाओं द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

उद्घाटन समारोह रविवार 18 मई, 2025 (सायं 5:00 बजे)
!! कार्यक्रम !!
भव्य समापन समारोह रविवार 25 मई, 2025 (सायं 4:30 बजे)

शिविरार्थी के लिए निर्देश
1. शिविरार्थी की आयु 11 वर्ष से अधिक हो। शिविर शुल्क 500/- प्रति शिविरार्थी होगा। अपने नाम दो दिन पूर्व भेजें।
2. शिविरार्थी को शिविर स्थल पर छोड़ने और वापिस ले जाने की जिम्मेदारी अभिभावकों की होगी।
3. शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, मग, पानी की बोतल, अपने पहनने के कपड़े, टार्च, स्लिंग बैग एवं ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाए। शिविरार्थी अपने साथ कोई कीमती सामान न लाएं।
4. शिविरार्थी दो जोड़ी सफेद सलवार-कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी. शूज तथा दो पासपोर्ट साईज फोटो साथ लाए।
5. सभी शिविरार्थी 18 मई, 2025 प्रात: 11:00 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जाए। साथ ही शिविरार्थी एवं अधिकारी 18 मई, 2025 की दोपहर का भोजन अपने साथ अवश्य लाएं।

निवेदक
शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372 | डॉ लिपिका आर्या, सहसंचालिका, 811203087 | विभा आर्या, मंत्राणी, 9873054398 | अंजली आर्या, कोषाध्यक्षा, 7738630190 | डॉ वसुंधरा आर्या, बौद्धिकाध्यक्षा, 9555952750 | वीना आर्या, वरिष्ठ संरक्षिका | डॉ. रचना चावला, संयोजक, स्वास्थ्य विशेषज्ञ

शोक समाचार

श्रीमती मुक्ता मुंजाल जी का निधन

महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी, सफल उद्योगपति (हीरोग्रुप) के श्री सुनील कान्त मुंजाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती मुक्ता मुंजाल जी का मंगलवार दिनांक 30 अप्रैल, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 मई, 2025 को अशोका होटल, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

श्री हंसराज आर्य जी का निधन

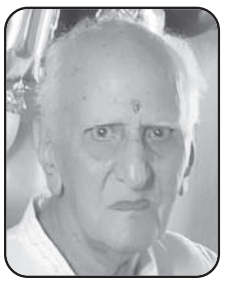

आर्य प्रतिनिधि सभा असम एवं आर्यसमाज गुवाहाटी के पूर्व प्रधान श्री हंसराज आर्य जी का दिनांक 5 मई, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन भूतनाथ शान्तिपुर शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 8 मई, 2025 को आर्यसमाज गुवाहाटी में सम्पन्न हुई।

श्री कृष्ण कुमार आर्य जी का निधन

आर्यसमाज एवं आर्य गुरुकुल तिहाड के संरक्षक श्री कृष्ण कुमार आर्य जी का दिनांक 5 मई, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 6 मई को बेरीवाला बाग शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 8 मई, 2025 को आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 05 मई, 2025 से रविवार 11 मई, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 8-9-10/05/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 मई, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

प्रतिष्ठा में,

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु 51000/-** रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा

आर्य भजनोपदेशक संवाद एवं सम्मिलन सत्र का भव्य आयोजन

आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन- आचार्य देवव्रत जी, माननीय राज्यपाल-गुजरात

दिनांक : 2-3-4 जून 2025
स्थान : गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
उद्घाटन : 2 जून 2025,12:00 बजे (दोपहर)

इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत के आर्य भजनोपदेशक, संगीतज्ञ सादर आमंत्रित हैं

कृपया 2 जून को प्रात: 10 बजे से पूर्व गुरुकुल में पहुंचने का अवश्य प्रयास करें

निवेदक:-

देशबंधु मदान प्रधान	उमेद सिंह शर्मा मंत्री	राजकुमार आर्य प्रधान	सहदेव 'बेधड़क' प्रधान 9917553700	डॉ कैलाश 'कर्मठ' मंत्री 9330645181	पं. नरेश वेदस्थी कोषाध्यक्ष 9411428312

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा गुरुकुल कुरुक्षेत्र भारतीय आर्य भजनोपदेशक समिति

आर्य भजनोपदेशकों एवं संगीतज्ञों के आने-जाने का मार्गव्यय, भोजन एवं आवास की सम्पूर्ण व्यवस्था आयोजन समिति द्वारा की जायेगी

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, जया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह